उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागांग भैरव और रागांग पूर्वी का विश्लेषणात्मक अध्ययन

Uttar Bharatiya Shastriya Sangeet me Ragang Bhairav aur Ragang Purvi ka Vishleshnatmak Adhyayan

डिपार्टमेन्ट ऑफ़ इंडियन क्लासिकल म्यूजिक (वोकल)
फैकल्टी ऑफ़ परफोर्मिंग आर्ट्स
दि महाराजा सयाजीराव यूनिवर्सिटी ऑफ़ ब़रोडा

पी.एच.डी. हेतु प्रस्तुत शोध सारांश

शोधकर्ता
मकरंद सुरेश सरपोतदार

Registration No. : FOPA/73   Registration Date : 25/01/2018

<u>मार्गदर्शक (Guide)</u>
डॉ. राजेश केलकर
एच.ओ.डी. एन्ड डीन,
डिपार्टमेन्ट ऑफ़ इंडियन क्लासिकल म्यूजिक (वोकल)
फैकल्टी ऑफ़ परफोर्मिंग आर्ट्स
दि महाराजा सयाजीराव यूनिवर्सिटी ऑफ़ ब़रोडा

१. प्रस्तावना

"राग" हमारे शास्त्रीय संगीत का अभिन्न एवं महत्त्वपूर्ण अंग है । राग गायन के पूर्व जाति गायन का प्रचार-प्रसार था । राग और जाति गायन के नियमो मे कई साम्यताएँ पाई जाती है । "राग" की सर्वप्रथम व्याख्या मतंगकृत बृहद्देशी ग्रंथ मे प्राप्त है । राग के संबंध मे कई विद्वानो ने अपने विचार प्रस्तुत किए है । रागो का अध्ययन एवं विश्लेषण प्राचीन काल से आज तक नित्य नूतन रूप से हो रहा है । रागो के सूक्ष्म अध्ययन के विभिन्न मार्ग दिखाई देते है । राग की रचना मे रागांग यह महत्त्वपूर्ण घटक है । राग को समझने के लिए रागांग का विचार एवं अध्ययन करना आवश्यक है । राग वर्गीकरण की विभिन्न पद्धतियों मे आधुनिक काल मे थाट पद्धति एवं रागांग पद्धति को विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण माना गया है । "रागांग" के महत्त्व को समझते हुए शोधार्थीने भैरव एवं पूर्वी रागांग का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने का प्रयास इस शोध प्रबंध द्वारा किया है ।

२ . प्रस्तुत विषय पर शोध प्रबंध करने की आवश्यकता

रागांग पद्धति इस विषय पर लिखे गए कुछ शोध प्रबंधो, पुस्तको और लेखों के माध्यम से हमे जानकारी प्राप्त होती है । "राग" हमारे भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक महत्त्वपूर्ण एवं अभिन्न अंग है । राग के संदर्भ में कई प्राचीन गंथो में व्याख्याए और चर्चा पाई गयी है । रागों का अध्ययन प्राचीन काल से आज तक नित्य नूतन रूप से हो रहा है ।

संगीत शास्त्र में "राग" का दो अर्थो में प्रयोग हुआ है, एक सामान्य दूसरा विशेष ! सामान्य अर्थ में "राग" रंजकता का वाचक है और विशेष अर्थ में वह एक ऐसे नादमय व्यक्तित्व का द्योतक है, जो स्वरदेह और भावदेह से संबंधित है । राग शब्द रंज धातु से बना है जिसका मुख्य अर्थ है रंगना. चित्त का किसी वृत्ति-विशेष अथवा अवस्था - विशेष में

अधिष्ठान यही "रंगने" का तात्पर्य कहा जा सकता है ।

रागों के सूक्ष्म अध्ययन के विभिन्न मार्ग दिखाई देते है जैसे राग और उसका गायन समय, प्राचीन राग, नव निर्मित राग, जोड़ राग, मिश्र राग, संधि प्रकाश राग, परमेल प्रवेशक राग, उत्तरांग प्रधान राग, पूर्वांग प्रधान राग, विभिन्न जातियों के राग, घराने और राग गायन/वादन, बंदिशे और राग आदि । राग यह विषय व्यापक है और अलग अलग द्दष्टिकोण से इस के संबंध में शोध कार्य हुआ है और अभी भी अपार सम्भावनाएं दिखाई देती है ।

अगर हम किसी राग की जानकारी का अभ्यास करे तो प्राथमिक रूप में हमे उस राग का वादी स्वर, संवादी स्वर, अनुवादि स्वर, ठाठ, गायन समय, आरोह - अवरोह, वर्जित स्वर, शुद्ध-कोमल-तीव्र-स्वर आदि प्राप्त होते है । परन्तु राग की रचना मुख्य रूप से उसके आरोही - अवरोही चलन, राग वाचक विशेष स्वर संगतियो, स्वरों के विशिष्ट लगावो आदि से होती है । राग के इसी चलन में एक "विशिष्ट स्वर संदर्भ" समाविष्ट होता है जिसे स्व. पंडित नारायण मोरेश्वर खरे जी ने "रागांग" कहा है । इसी रागांग को केंद्र मे रखकर रागांग भैरव और रागांग पूर्वी के विश्लेषणात्मक अध्ययन को इस शोध प्रबंध के द्वारा प्रस्तुत किया है ।

इस विषय पर शोध प्रबंध लिखने की आवश्यकता इसलिए महसूस हुई क्योंकि उपरोक्त विषय पर शोध निबंध नहीं लिखा गया है । अतः मेरे शोध प्रबंध से भैरव एवं पूर्वी रागांग के रागों का, रागांग को केन्द्रबिन्दू में रखकर अध्ययन करने का विनम्र प्रयास किया गया है । इस शोध प्रबंध से समाज मे संगीत की रूचि की अभिवद्धि होती एवं संगीत की गहनता का परिचय प्राप्त होता और संगीत जगत भी इससे लाभान्वित होगा इसमें कोई संदेह नहीं है ।

३. परिकल्पना

भैरव और पूर्वी राग यह संधिप्रकाश रागों की श्रेणी में आते है । भैरव प्रातःकालीन राग होने के कारण इस में शुद्ध मध्यम की प्रबलता दिखाई देती है । पूर्वी सायंकालीन राग होने के कारण इस में तीव्र मध्यम की प्रबलता दिखाई देती है । एक व्यापक रूप से दोनों रागों मे स्वर साम्यता है परन्तु स्वरों की प्रबलता - निर्बलता, भिन्न स्वर - लगाव से प्रातःगेयत्व और सायंगेयत्व सिद्ध होता है । हम प्रातःकालीन भैरव एवं सायंकालीन पुर्वी को एक दुसरे के पूरक मान सकते है । भैरव और पूर्वी रागों मे समाई हुई रागांग वाचक स्वर संगतियों के विश्लेषणात्मक अध्ययन को विभिन्न गंथों, साक्षात्कारों, सप्रयोग व्याख्यानों से प्राप्त विद्वानों के मतों को आधार रूप मानकर शोधार्थी द्वारा शोध प्रबंध के रूप में प्रस्तुत करने का एक कष्टसाध्य प्रयास है।

४. आकड़ा एकत्रित करने की विधि

१. संगीत ग्रन्थ, किताबों, शोध निबंधो, संगीत पत्रिकाओं, शौध पत्रों आदि से माहिती का संकलन किया गया ।

२. विद्वानों के साक्षात्कारों एवं सप्रयोग व्याख्यानों से जानकारी को एकत्रित किया ।

३. इन्टरनेट टेक्नोलॉजी का भी पूरा फायदा उठाया गया है ।

४. You-tube एवं दूरदर्शन जैसे माध्यमों से प्राप्त वार्तालापों से भी तथ्य एकत्रित करने का प्रयास किया गया है ।

## ५.	पुन:विलोकन

प्रस्तुत विषय मे संबंधित आंकड़े एकत्रित करने के पश्चात सब का पुन:विलोकन किया गया और त्याज्य आंकड़ों को छोड़ दिया गया तथा सम्बंधित तथ्यों को विश्लेषणात्मक रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है ।

## ६.	उद्देश्य

राग और रागों का वर्गीकरण यह संगीथ के क्रियात्मक एवं शास्त्र पक्ष का अत्यंत महत्त्वपूर्ण विषय रहा है । राग को सिखने – सिखाने की प्रक्रिया में रागांग का विचार अनिवार्य है ऐसा अधिकतर विद्वानों का मत है, जिससे शोधार्थी भी पूर्णतः सहमत है । इसीकारण प्रचलित रागांगो मेसे भैरव और पूर्वी अंग के रागों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करते हुए इन रागों के सन्दर्भ में एक नवीनतम विचार प्रस्तुत करना यह शोधार्थी का उद्देश्य है ।

रागों के संदर्भ मे प्राप्त पुस्तकों में राग के संदर्भ में प्रारम्भिक माहिती, स्वर विस्तार, बंदिशें, आलाप – तान आदि अधिकतर पाए जातें है । इस शोध प्रबंध के द्वारा राग माहिती के साथ साथ विद्वानों के मत, रागांग के आधार पर स्वर – विस्तारों एवं बंदिशों का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है । इससे रागांग की दृष्टि से संगीत के विद्यार्थी विचार मंथन के लिए अवश्य प्रेरित होंगे ऐसा शोधार्थी का मत है । जिस प्रकार इन दो रागांगो जैसे काफी, कान्हडा, मल्हार आदि रागांग पर भविष्य में शोध कार्य किया जा सकता है । यह शोध कार्य भविष्य के शोधार्थी के लिए मार्गदर्शनक सिद्ध हों सकें इस उद्देश्य को भी ध्यान में रखकर यह शोध प्रबंध लिखने का प्रयास किया गया है ।

संगीत जगत में श्रोता भी एक महत्त्वपूर्ण घटक माना गया है । प्रस्तुत शोध प्रबंध के द्वारा शास्त्रीय संगीत के रागों को समझाने की एक सूक्ष्म दृष्टि संगीत से जुड़े हुए समाज के हर वर्ग को प्राप्त हो यह हेतु भी इस शोध प्रबंध से साध्य होगा ऐसा शोधार्थी का मत है ।

ठाट, राग और रागांग इन तीनों का एक दुसरे से घनिष्ट सम्बन्ध है, इन तीनों का विचार करते हुए राग – वर्गीकरण पर नूतन विचार प्रस्तुत करने का इस शोध प्रबंध के माध्यम से शोधार्थी द्वारा एक विनम्र प्रयास किया गया है ।

७. शोधकार्य एवं योजना

रागो के सम्बन्ध में विद्वानों कें मतों का संकलन एवं उन्हे सरलता से प्रस्तुत किया गया है । विद्वानों के साक्षात्कारों एवं सप्रयोग व्याख्यानों से माहिती का संकलन किया गया और विषय की आवश्यकता अनुसार प्रस्तुत किया गया है । यह भी प्रयास किया गया है कि इस कार्य पद्धति द्वारा तथ्यों का सरलीकरण करते हुए विवेचन किया जाये ।

८. स्थायी अध्याय

इस शोध प्रबंध को ५ स्थायी अध्यायों में विभाजित किया गया है ।

१. राग : परिभाषाओं का अध्ययन

१.१ जाती गायन के संदर्भ में पं. रातंजनकर जी के विचार

१.२ जाती गायन के नियम

१.३ बृहद्देशी ग्रन्थ में प्राप्त राग की परिभाषा के संदर्भ में पं. रातंजनकर जी का मत

१.४ राग के संदर्भ में पं. के.जी. गिंडे जी का मत

१.५ राग की विभिन्न परिभाषाएँ

"राग" इस विषय पर काफी शोधकार्य किया गया है । कई शोध प्रबंधों, संगीत के प्राचीन ग्रंथों, संगीत शास्त्र की किताबों, लेखों आदि में "राग" की परिभाषा, उपत्ति आदि विषयो का लेखन हो चुका है । जाती गायन से राग के सम्बन्ध के विषय पर विद्वानों के मतो का अध्ययन इस अध्याय में शोधार्थी द्वारा किया गया है ।
शोधार्थी द्वारा इस अध्याय में "राग" के संदर्भ में आधुनिक समय के कलाकार, विद्वान और ग्रन्थकारो के मतों को जानकर इस विषय को नवीन द्रष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है । कई सालो की साधना, अनुभव, चिंतन के फलस्वरूप विद्वानों को, कलाकारो को राग के संदर्भ में कुछ नए द्रष्टिकोण, नए विचार, नए ज्ञान की प्राप्ति होती है। इस अध्याय में इन्ही विचारो का संकलन एवं विश्लेषण करते हुए "राग" को गहराई से समझने का प्रयास किया गया है । "राग" के संदर्भ में नए विचार, अनुभवों का संकलन इस अध्याय में किया गया है । जो "राग" से रागांग को समझने में अत्यंत सहायक होगा ऐसा शोधार्थी का मानना है ।

२. राग वर्गीकरण की विभिन्न पद्धतियाँ एवं रागांग पद्धति का अध्ययन

२.१ राग वर्गीकरण

२.१.१ प्राचीन काल

२.१.२ मध्य काल

२.१.३ आधुनिक काल

२.२ राग वर्गीकरण की रागांग पद्धति

२.२.१ रागांग वर्गीकरण का ग्रंथों में उल्लेख

२.२.२ रागांग वर्गीकरण के संदर्भ में विद्वानों के मत

२.२.२.१ पंडित नारायण मोरेश्वर जी का मत

२.२.२.२ पंडित राजोपाध्ये जी का मत

२.२.२.३ पंडित ओमकारनाथ ठाकुर जी का मत

२.२.२.४ पंडित के. जी. गिन्डे जी का मत

२.२.२.५ डॉ. अलका देव मरुलकर जी का मत

२.२.२.६ पंडित यशवंत म्हाले जी का मत

इस अध्याय का मुख्य उद्देश "रागांग पद्धति" का विश्लेषण है । रागांग क्या है ? रागांग का महत्त्व क्या है ? रागांग पद्धति पर किन विद्वानों ने अपने विचार प्रस्तुत किये है? इन प्रश्नों का उत्तर खोजने का प्रयास शोधार्थी द्वारा किया गया है । रागांग पद्धति के संदर्भ में विभिन्न विचारवंतो के मत एवं राग वर्गीकरण की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि इन विषयों को इस अध्याय में शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत किया गया है ।

३. रागांग भैरव का विश्लेषणात्मक अध्ययन

३.१ राग भैरव

३.१.१ राग भैरव : महत्त्व

३.१.२ राग भैरव : परिचय

३.१.३ श्री मल्लक्ष्यसंगीतम् मे प्राप्त राग भैरव का विवरण

३.१.४ राग भैरव के संबंध में विद्वानों के मत

३.१.५ राग भैरव का स्वर विस्तार एवं रागांग भैरव का विश्लषेण

३.१.६ राग भैरव की बंदिशे एवं रागांग भैरव का विश्लेषण

३.२ राग रामकली : परिचय

३.२.१ श्री मल्लक्ष्यसंगीतम् में प्राप्त राग रामकली का विवरण

३.२.२ राग रामकली के संबंध में विद्वानो के मत

३.२.३ राग रामकली का स्वर विस्तार एवं रागांग भैरव का विश्लेषण

३.२.४ राग रामकली की बंदिशे एवं रागांग भैरव का विश्लेषण
३.३ राग अहिर भैरव : श्री मल्लक्ष्यसंगीतम् मे प्राप्त विवरण
३.३.१ राग अहिर भैरव के संबंध में विद्वानों के मत
३.३.२ राग अहिर भैरव का स्वर विस्तार एवं रागांग भैरव का विश्लेषण
३.३.३ राग अहिर भैरव की बंदिशे एवं रागांग भैरव का विश्लेषण
३.४ राग गुणक्री : श्री मल्लक्ष्यसंगीतम् मे प्राप्त विवरण
३.४.१ राग गुणक्री के संबंध मे विद्वानो के मत
३.४.२ राग गुणक्री का स्वर विस्तार एवं रागांग भैरव का विश्लेषण
३.४.३ राग गुणक्री की बंदिशे एवं रागांग भैरव का विश्लेषण
३.५ राग जोगिया : श्री मल्लक्ष्यसंगीतम् मे प्राप्त विवरण
३.५.१ राग जोगिया के संबंध मे पं. भातखंडेजी का मत
३.५.२ राग जोगिया का स्वर विस्तार एवं रागांग भैरव का विश्लेषण
३.५.३ राग जोगिया कि बंदिशे एवं रागांग भैरव का विश्लेषण
३.६ राग नटभैरव : विद्वानो के मत
३.६.१ राग नटभैरव का स्वर विस्तार एवं रागांग भैरव का विश्लेषण
३.६.२ राग नटभैरव की बंदिशे एवं रागांग भैरव का विश्लेषण
३.७ राग शिवमत भैरव : श्री मल्लक्ष्यसंगीतम् मे प्राप्त विवरण
३.७.१ राग शिवमत भैरव के संबंध मे विद्वानो के मत
३.७.२ राग शिवमत भैरव का स्वर विस्तार एवं रागांग भैरव का विश्लेषण
३.७.३ राग शिवमत भैरव की बंदिशे एवं रागांग भैरव का विश्लेषण
३.८ राग आनंद भैरव : श्री मल्लक्ष्यसंगीतम् मे प्राप्त विवरण
३.८.१ राग आनंद भैरव के संबंध मे विद्वानो के मत
३.८.२ राग आनंद भैरव का स्वर विस्तार एवं रागांग भैरव का विश्लेषण
३.८.३ राग आनंद भैरव की बंदिशे एवं रागांग भैरव का विश्लेषण

३.९ राग प्रभात भैरव : श्री मल्लक्ष्यसंगीतम् मे प्राप्त विवरण
३.९.१ राग प्रभात भैरव के संबंध मे विद्वानो के मत
३.९.२ राग प्रभात भैरव का स्वर विस्तार एवं रागांग भैरव का विश्लेषण
३.९.३ राग प्रभात भैरव की बंदिशे एवं रागांग भैरव का विश्लेषण
३.१० राग बंगाल भैरव : श्री मल्लक्ष्यसंगीतम् मे प्राप्त विवरण
३.१०.१ राग बंगाल भैरव के संबंध मे विद्वानो के मत
३.१०.२ राग बंगाल भैरव का स्वर विस्तार एवं रागांग भैरव का विश्लेषण
३.१०.३ राग बंगाल भैरव की बंदिशे एवं रागांग भैरव का विश्लेषण
३.११ राग बसंत मुखारी : पंडित जयसुखलाल शाह जी का मत
३.११.१ राग बसंत मुखारी का स्वर विस्तार एवं रागांग भैरव का विश्लेषण
३.११.२ राग बसंत मुखारी की बंदिशे एवं रागांग भैरव का विश्लेषण
३.१२. राग विभास : श्री मल्लक्ष्यसंगीतम् मे प्राप्त विवरण
३.१२.१ राग विभास के संबंध मे पंडित भातखंडे जी का मत
३.१२.२ राग विभास का स्वर विस्तार एवं रागांग भैरव का विश्लेषण
३.१२.३ राग विभास की बंदिशे एवं रागांग भैरव का विश्लेषण
३.१३ राग भैरव बहार : विद्वानों के मत
३.१३.१ राग भैरव बहार की बंदिशे एवं रागांग भैरव का विश्लेषण
३.१४ राग सौराष्ट्र भैरव : श्री मल्लक्ष्यसंगीतम् मे प्राप्त विवरण
३.१४.१ राग सौराष्ट्र भैरव के संबंध मे विद्वानों के मत
३.१४.२ राग सौराष्ट्र भैरव का स्वर विस्तार एवं रागांग भैरव का विश्लेषण
३.१४.३ राग सौराष्ट्र भैरव की बंदिशे एवं रागांग भैरव का विश्लेषण
३.१५ राग कालिंगडा : श्री मल्लक्ष्यसंगीतम् मे प्राप्त विवरण
३.१५.१ राग कालिंगडा के संबंध में विद्वानो के मत
३.१५.२ राग कालिंगडा की बंदिश एवं रागांग भैरव का विश्लेषण

३.१६	राग गौरी : श्री मल्लक्ष्यसंगीतम् मे प्राप्त विवरण

३.१६.१	राग गौरी के संबंध में विद्वानो के मत

३.१६.२	राग गौरी का स्वर विस्तार एवं रागांग भैरव का विश्लेषण

३.१६.३	राग गौरी की बंदिश एवं रागांग भैरव का विश्लेषण

३.१७	राग बैरागी भैरव : विद्वानो के मत

३.१७.१	राग बैरागी भैरव का स्वर विस्तार एवं रागांग भैरव का विश्लेषण

३.१७.२	राग बैरागी भैरव की बंदिशे एवं रागांग भैरव का विश्लेषण

यह इस शोध प्रबंध का एक महत्त्वपूर्ण अध्याय है जो इस शोध प्रबंध के मूल विषय को प्रस्तुत करता है । इस अध्याय में रागांग भैरव वाचक स्वर संगतियों को प्रस्तुत किया गया है । उसी रागांग भैरव का प्रयोग अन्य रागों में किस प्रकार किया जाता है । इसका विश्लेषण किया गया है । रागांग को खोजने के लिए विभिन्न रागों के स्वर विस्तार, बंदिश, ग्रंथों से प्राप्त उल्लेख आदि का अध्ययन करते हुए राग और रागांग का सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास किया गया है । राग, ठाट और रागांग को ध्यान में रखकर राग वर्गीकरण का एक नवीनतम प्रयास इस अध्याय में शोधार्थी द्वारा किया गया है ।

**४.	रागांग पूर्वी का विश्लेषणात्मक अध्ययन**

४.१	राग पूर्वी

४.१.१	श्रीमल्लक्ष्यसंगीतम् मे प्राप्त राग पूर्वी का विवरण

४.१.२	राग पूर्वी के संबंध मे विद्वानो के मत

४.१.३	राग पूर्वी का स्वर विस्तार एवं रागांग पूर्वी का विश्लेषण

४.१.४	राग पूर्वी की बंदिशे एवं रागांग पूर्वी का विश्लेषण

४.२	राग परज : श्रीमल्लक्ष्यसंगीतम् मे प्राप्त विवरण

४.२.१	राग परज के संबंध मे विद्वानो के मत

४.२.२ राग परज का स्वर विस्तार एवं रागांग पूर्वी का विश्लेषण
४.२.३ राग परज की बंदिशे एवं रागांग पूर्वी का विश्लेषण
४.३ राग पूरिया धनाश्री : श्रीमल्लक्ष्यसंगीतम् मे प्राप्त विवरण
४.३.१ राग पूरिया धनाश्री के संबंध मे विद्वानो के मत
४.३.२ राग पूरिया धनाश्री का स्वर विस्तार एवं रागांग पूर्वी का विश्लेषण
४.३.३ राग पूरिया धनाश्री की बंदिशे एवं रागांग पूर्वी का विश्लेषण
४.४ राग श्री : श्रीमल्लक्ष्यसंगीतम् मे प्राप्त विवरण
४.४.१ राग श्री के संबंध मे पंडित विष्णु नारायण भातखंडेजी का मत
४.४.२ राग श्री का स्वर विस्तार एवं रागांग पूर्वी का विश्लेषण
४.४.३ राग श्री की बंदिशे एवं रागांग पूर्वी का विश्लेषण
४.५ राग बसंत : श्रीमल्लक्ष्यसंगीतम् मे प्राप्त विवरण
४.५.१ राग बसंत के संबंध मे पंडित विष्णु नारायण भातखंडेजी का मत
४.५.२ राग बसंत का स्वर विस्तार एवं रागांग पूर्वी का विश्लेषण
४.५.३ राग बसंत की बंदिशे एवं रागांग पूर्वी का विश्लेषण
४.६ राग गौरी : श्रीमल्लक्ष्यसंगीतम् मे प्राप्त विवरण
४.६.१ राग गौरी के संबंध मे विद्वानो के मत
४.६.२ राग गौरी का स्वर विस्तार एवं रागांग पूर्वी का विश्लेषण
४.६.३ राग गौरी की बंदिशे एवं रागांग पूर्वी का विश्लेषण
४.७ राग जैताश्री : श्रीमल्लक्ष्यसंगीतम् मे प्राप्त विवरण
४.७.१ राग जैताश्री के संबंध मे विद्वानो के मत
४.७.२ राग जैताश्री का स्वर विस्तार एवं रागांग पूर्वी का विश्लेषण
४.७.३ राग जैताश्री की बंदिशे एवं रागांग पूर्वी का विश्लेषण
४.८ राग त्रिवेणी : श्रीमल्लक्ष्यसंगीतम् मे प्राप्त विवरण
४.८.१ राग त्रिवेणी के संबंध मे विद्वानो के मत

४.८.२ राग त्रिवेणी का स्वर विस्तार एवं रागांग पूर्वी का विश्लेषण
४.८.३ राग त्रिवेणी की बंदिशे एवं रागांग पूर्वी का विश्लेषण
४.९ राग रेवा : श्रीमल्लक्ष्यसंगीतम् मे प्राप्त विवरण
४.९.१ राग रेवा के संबंध मे पंडित भातखंडे जी का मत
४.९.२ राग रेवा का स्वर विस्तार एवं रागांग पूर्वी का विश्लेषण
४.९.३ राग रेवा की बंदिशे एवं रागांग पूर्वी का विश्लेषण
४.१० राग मालवी : श्रीमल्लक्ष्यसंगीतम् मे प्राप्त विवरण
४.१०.१ राग मालवी के संबंध में पंडित भातखंडेजी का मत
४.१०.२ राग मालवी का स्वर विस्तार एवं रागांग पूर्वी का विश्लेषण
४.१०.३ राग मालवी की बंदिशे एवं रागांग पूर्वी का विश्लेषण
४.११ राग विभास : विद्वानो के मत
४.११.१ राग विभास का स्वर विस्तार एवं रागांग पूर्वी का विश्लेषण
४.११.२ राग विभास की बंदिश एवं रागांग पूर्वी का विश्लेषण
४.१२ राग टंकी : श्रीमल्लक्ष्यसंगीतम् मे प्राप्त विवरण
४.१२.१ राग टंकी का स्वर विस्तार एवं रागांग पूर्वी का विश्लेषण
४.१२.२ राग टंकी की बंदिश

यह शोध प्रबंध का यह महत्त्वपूर्ण अध्याय है जो इस शोध प्रबंध के मूल विषय को प्रस्तुत करता है । इस अध्याय में रागांग पूर्वी वाचक स्वर संगतियों को प्रस्तुत किया गया है । उसी रागांग पूर्वी का अन्य रागों में प्रयोग किस प्रकार किया जाता है इसका विश्लेषण किया गया है । रागांग को खोजने के लिए विभिन्न रागों के स्वर विस्तार, बंदिशे, ग्रंथों से प्राप्त उल्लेख आदि का अध्ययन करते हुए राग और रागांग का सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास किया गया है । पूर्वी रागांग के उपांग श्री रागांग एवं श्री रागांग के उपांग गौरी के सम्बन्ध में भी माहिती को विश्लेषणात्मक रूप में प्रस्तुत किया है ।

५. रागांग भैरव एवं रागांग पूर्वी का तुलनात्मक अध्ययन

५.१ स्वर साम्यता एवं विभिन्नता

५.२ प्रस्तुतीकरण एवं रागांग

५.२.१ पंडित कृष्णराव शंकर पंडित - राग भैरव

५.२.२ उस्ताद फैयाज़ खाँ - राग पूर्वी

५.३ रागों की समानता एवं विभिन्नता

५.३.१ गौरी (भैरव ठाट) एवं गौरी (पूर्वी ठाट)

५.३.२ विभास (भैरव ठाट) एवं विभास (पूर्वी ठाट)

५.३.३ परज कालिंगडा

५.४ कर्नाटक मेल पद्धति एवं ठाट पद्धति

इस अध्याय में रागांग भैरव और पूर्वी का एक दुसरे से तुलनात्मक सम्बन्ध इस विषय पर शोधार्थी द्वारा अपने विचार प्रस्तुत किये है । राग भैरव और पूर्वी के प्रस्तुतीकरण में रागांग वाचक स्वर संगतियों का प्रयोग को विद्वान कलाकारों के ध्वनिमुद्रण के आधार पर प्रस्तुत किया गया है । भैरव रागांग और पूर्वी रागांग वाचक स्वर संगतियों की तुलना भी इस अध्याय में शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत की गयी है । कई राग ऐसे भी प्राप्त है जिन के नाम समना है परन्तु भैरव और पूर्वी दोनों अंगों से गए जाते है इन का उल्लेख इस अध्याय मे प्रस्तुत किया गया है । जीन रागों में भैरव और पूर्वी रागांग वाचक स्वर संगतियों का मिश्रण पाया जाता है ऐसे राग का विशेष उल्लेख इस अध्याय में किया गया है ।

उपसंहार

इस अध्याय में शोधार्थी द्वारा रागांग भैरव एवं पूर्वी के विश्लेषणात्मक अध्ययन से

प्राप्त किये गए निष्कर्षो एवं तथ्यों की चर्चा की है । सभी अध्यायों में प्राप्त हुई महत्वपूर्ण जानकारीयों की चर्चा की है । रागांग आधारित नवीनतम राग वर्गीकरण की चर्चा इस अध्याय में शोधार्थी द्वारा की गयी है । संपूर्ण शोध प्रबंध की शोध प्रक्रीया से प्राप्त तथ्यों को सार रूप इस अध्ययन में प्रस्तुत किया गया है ।

९. संदर्भ सूचि

१. सांगोराम, श्रीरंग/मुक्त संगीत संवाद/गानवर्धन संस्था, पुणे, पहिली आवृत्ति, १९८८

२. रातंजनकर, श्रीकृष्ण/संगीत परिभाषा विवेचन/आचार्य एस. एन. रातंजनकर फाऊन्डेशन, प्रथम संस्करण, २००० (हिन्दी अनुवाद)

३. गर्ग, लक्ष्मीनारायण/निबंध संगीत/संगीत कार्यालय, हातरस, तृतीय संस्करण, २००३

४. आप्टे, वामन शिवराम/संस्कृत-हिन्दी कोष/मोतीलाल बनारसी दास, बारहवा संस्करण, २०१५

५. खाँ, अमान अली/अमर बंदिशे/संस्कार प्रकाशन, मुंबई, प्रथम आवृत्ति, २०१७

६. कशालकर, विकास/संपादक/मालनिया गूँद लावो री/संस्कार प्रकाशन, मुंबई, द्वितीय आवृत्ति, २०१२

७. कायकिणी, दिनकर/रागरंग/संस्कार प्रकाशन, मुंबई, द्वितीय आवृत्ति, २०२०

८. आठवले, वि.रा./नाद वैभव/ संस्कार प्रकाशन, मुंबई, प्रथम आवृत्ति

९. मेहता, रमणलाल/आगरा घराना परम्परा गायकी और चीजें/ म.स. युनिवर्सिटी बडौदा, प्रथम आवृत्ति, १९६८

१०. जोशी, वैजयंती रमेशचन्द्र/राग मंथन/संस्कार प्रकाशन, मुंबई, प्रथम आवृत्ति, २०१६

११. भातखंडे, विष्णु नारायण/ हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति/पॉप्युलर प्रकाशन, मुंबई, तिसरी आवृत्ति, २०१६

१२. भातखंडे, विष्णु नारायण/क्रमिक पुस्तक मालिका/संगीत कार्यालय, हातरस, उन्नीसवी आवृत्ति, २०२०

१३. संगीत/पूर्वी थाट अंक/ संगीत कार्यालय, हातरस, जनवरी १९५७

१४. संगीत/भैरव अंक/संगीत कार्यालय, हातरस, जनवरी १९५५

१५. रातंजनकर, श्रीकृष्ण नारायण/अभिनव गीतमंजिरी/आचार्य एस.एन. रातंजनकर फाऊन्डेशन, मुंबई, तृतीय संस्करण, १९९०

१६. तिवारी, शुचि /राग वर्गीकरण पद्धतिओं मे रागांग पद्धति का महत्त्व/ अध्ययन पब्लीशर्स एन्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, २०१३

१७. कशालकर, विकास/ओंकार आदिनाद/ संस्कार प्रकाशन, मुंबई, २०१०

१८. आठवले, वि.रा./राग वैभव/ अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मंडल, द्वितीय प्रकाशन

१९. Ginde, K. G./ Lecture-Demonstration, Bhairav Ang Ragas/Meera Music, Mumbai

२०. Ginde, K. G./ Lecture-Demonstration, Poorvi Ang Ragas/Meera Music, Mumbai

२१. Popley, H.A./The Music of India/Ragini Low Price Publications, Fourth Edition, 1996

२२. Bandyopadhaya, S./ The Origin of Raga/Sircar Bros. Educational Publishers, First Edition, 1946

२३. Atre, Prabha/ Enlightening the Listener- Contemporary North Indian Classical Vocal Music Performance/B.R. Rhythms, First Revised Edition

२४. Shrama, Anjali/ Hindustani Music and the Asthetic Concept of Form / D.K. Print World Pvt. Ltd., Second Edition, 2009

२५. Raja, Deepak S./ The Raganess of Ragas Ragas Beyond the Grammar/ D.K. Print World